विषयानुक्रमणिका *

प्राक्कथन	vii
भूमिका	xiii
अवतरणिका	xv
श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु के संस्करणों की सूची	xxxvii
सम्पूर्ण मूल भक्तिरसामृतसिन्धु की विभागानुसार लहरी-सूची	xxxix

१. भगवद्भक्ति-भेद-निरूपक
पूर्व-विभाग
प्रथम लहरी—सामान्यभक्ति

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
मङ्गलाचरण	१-६	२-५
इस विभाग की लहरियों का विषय-निरूपण	७-९	५
उत्तमा भक्ति का लक्षण	१०-१६	५
शुद्ध भक्ति के गुण	१७-४३	६-१७

* यह अनुक्रमणी श्रीपुरीदासजी के संस्करण के अनुसार है। इसमें पाठकों को विषय-प्रतिपादन का पूरा विश्लेषण मिलेगा, जिससे इष्ट विषय को ग्रन्थ में खोजने में सुविधा होगी। अनुक्रमणी में जो विषय-निर्देशक पद हैं वे मूल में सर्वत्र शीर्षक के रूप में अंकित नहीं हैं किन्तु इससे पाठकों को अपेक्षित स्थल खोजने में कोई असुविधा नहीं होगी क्योंकि प्रत्येक विषय के श्लोकाङ्क तथा पृष्ठाङ्क निर्दिष्ट हैं। यहाँ हमने पाठकों की सुविधा के लिए शीर्षक विषय हिन्दी में रखे हैं। —सम्पादिका

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
क्लेशघ्नता	१८	७
द्विविध पाप	१९	७
अप्रारब्धहरता	२०	७
प्रारब्धहरता	२१-२३	९
बीजहरता	२४	९
अविद्याहरता	२५-२६	९-११
शुभप्रदता	२७	११
जगत्प्रीणनादि-प्रदता	२८	११
सद्गुणादि-प्रदता	२९	११
सुख-प्रदता	३०-३२	११-१३
मोक्ष-लघुता-कारिता	३३-३४	१३
सुदुर्लभता	३५	१३
प्रथमा, द्वितीया	३६-३७	१३-१५
सान्द्रानन्द-विशेषात्मता	३८-४०	१५
श्रीकृष्णाकर्षणकारिता	४१-४३	१५-१७
त्रिविधा भक्ति का माहात्म्य	४४	१७
भक्ति में रुचि का आदर, युक्ति का अनादर	४५-४६	१७

द्वितीय लहरी—साधनभक्ति

भक्ति की त्रिविधता	१	१९
साधन भक्ति	२-५	१९
वैधी भक्ति	६-१३	१९-२१
अधिकारी	१४-१५	२१-२३
त्रिविध अधिकारी	१६	२३
उत्तम	१७	२३
मध्यम	१८	२३
कनिष्ठ	१९	२३
गीता में कहे गये चार अधिकारी	२०-२१	२३

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
भुक्ति-मुक्ति-स्पृहा भक्ति में बाधक	२२-५४	२५-३७
सालोक्यादि की कहीं-कहीं ग्रहणीयता	५५	३७
सुख-ऐश्वर्य-उत्तरा मुक्ति से प्रेम-सेवा-उत्तरा मुक्ति गरीयसी	५६	३७
भक्ति में पञ्चविध मुक्ति का अनादर	५७	३७
श्रीनारायण-भक्ति की अपेक्षा भी श्रीगोविन्द-भक्ति का उत्कर्ष	५८-५९	३७
भक्ति में मनुष्यमात्र की अधिकारिता	६०-७१	३१-४३
श्रीहरिभक्तिविलास में कहे गये भक्ति-अङ्गों के संक्षेप से वर्णन की सूचना	७२	४३
भक्ति-अङ्ग का लक्षण	७३	४३
भक्ति के चौंसठ अङ्ग	७४-९५	४३-४७
इन चौंसठ अङ्गों का पृथक् क्रमशः वर्णन	९६-२३७	४७-९३
श्रीगुरुपादाश्रय (१)	९७	४७
श्रीकृष्णदीक्षादि-शिक्षण (२)	९८	४९
विश्रम्भसहित गुरु-सेवा (३)	९९	४९
साधु-वर्त्म का अनुवर्तन (४)	१००-१०१	४९
भक्ति में अशास्त्रीयता	१०२	४९
सद्धर्म-पृच्छा (५)	१०३	४९
श्रीकृष्ण के लिये भोगादि-त्याग (६)	१०४	४९
द्वारकादि में निवास (७)	१०५	५१
पुरुषोत्तमवास	१०६	५१
गङ्गादिवास	१०७	५१
यावदर्थानुवर्त्तिता (८)	१०८	५१
हरिवासर-सम्मान (९)	१०९	५१
धात्री-अश्वत्थ आदि का गौरव (१०)	११०	५१
श्रीकृष्णविमुखजन के सङ्ग का त्याग (११)	१११-१२	५३

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
शिष्यों का अनुबन्ध न करना आदि तीन अङ्ग (१२, १३, १४)	११३	५३
व्यवहार में अकृपणता (१५)	११४	५३
शोक आदि के वश में न होना (१६)	११५	५३
अन्य देवों की अवज्ञा न करना (१७)	११६	५३
प्राणियों को उद्वेग न देना (१८)	११७	५५
सेवापराध-नामापराधों का वर्जन (१९)	११८-२०	५५
विष्णु एवं वैष्णव की निन्दा आदि को न सहना (असहिष्णुता) (२०)	१२१	५५
वैष्णव-चिह्न धारण करना (२१)	१२२	५५
हरिनाम के अक्षर धारण करना (२२)	१२३-२४	५७
निर्म्माल्य-धारण (२३)	१२५-२६	५७
श्रीविग्रह के सम्मुख नृत्य (२४)	१२७-२८	५७
दण्डवत् प्रणाम (२५)	१२९	५९
अभ्युत्थान (२६)	१३०	५९
अनुव्रज्या (२७)	१३१	५९
स्थान में जाना (२८)	१३२-१३३	५९
आलय में जाना	१३४	५९
परिक्रमा (२९)	१३५-३६	६१
अर्चन (३०)	१३७-३९	६१
परिचर्या (३१)	१४०-४३	६१-६३
गीत (३२)	१४४	६३
सङ्कीर्तन (३३)	१४५	६३
नामकीर्त्तन	१४६	६३
लीलाकीर्तन	१४७	६३
गुणकीर्तन	१४८	६५
जप (३४)	१४९-५०	६५
विज्ञप्ति (३५)	१५१	६५

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
त्रिविधा विज्ञप्ति	१५२	६५
सम्प्रार्थनात्मिका	१५३	६५
दैन्य-बोधिका	१५४	६७
लालसामयी	१५५-५६	६७
स्तव-पाठ (३६)	१५७-५९	६७
नैवेद्यास्वाद (३७)	१६०	६९
पाद्यास्वाद (३८)	१६१	६९
धूप-सौरभ्य (सुगन्ध लेना) (३९)	१६२	६९
माल्य-सौरभ्य	१६३-६४	६९
श्रीमूर्त्ति का स्पर्श (४०)	१६५	६९
श्रीमूर्त्ति का दर्शन (४१)	१६६	७१
आरात्रिक-दर्शन (४२)	१६७	७१
उत्सव-दर्शन	१६८	७१
पूजा-दर्शन	१६९	७१
श्रवण (४३)	१७०	७१
नाम-श्रवण	१७१	७१
चरित-श्रवण	१७२	७३
गुण-श्रवण	१७३	७३
श्रीकृष्णकृपा का ईक्षण (४४)	१७४	७३
स्मृति (४५)	१७५-७७	७३-७५
ध्यान (४६)	१७८	७५
रूप-ध्यान	१७९	७५
गुण-ध्यान	१८०	७५
क्रीड़ा-ध्यान	१८१	७५
सेवा-ध्यान	१८२	७५
दास्य (४७)	१८३	७५
प्रथम (कर्मार्पण)	१८४	७७
द्विविध दास्य	१८५-८६	७७
द्वितीय (कैङ्कर्य)	१८७	७७
सख्य (४८)	१८८	७७

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
प्रथम (विश्वास-सख्य)	१८९-९१	७७-७९
द्वितीय (मित्रवृत्ति)	१९२-९३	७९
आत्म-निवेदन (४९)	१९४-९५	७९
देही-समर्पण	१९६	७९
देह-समर्पण	१९७	८१
सख्य एवं आत्मनिवेदन की दुष्करता	१९८	८१
निज-प्रिय का उपहार (५०)	१९९	८१
उन्हीं के लिये अखिल क्रियाकलाप (५१)	२००	८१
शरणापत्ति (५२)	२०१-२	८१
तुलसी-सेवन (५३)	२०३-५	८३
शास्त्र का सेवन (५४)	२०६-१०	८३-८५
श्रीमथुरा का सेवन (५५)	२११-१३	८५
वैष्णवसेवन (५६)	२१४-१९	८५-८७
यथावैभव महोत्सव (५७)	२२०	८७
ऊर्जा (कार्त्तिक) मास का आदर (५८)	२२१	८७
श्रीमथुरा में विशेषतया	२२२-२३	८७
श्रीजन्मदिनयात्रा (५९)	२२४	८९
श्रीमूर्ति के चरण-सेवन में प्रीति (६०)	२२५	८९
श्रीभागवत का अर्थास्वाद (६१)	२२६-२७	८९
सजातीयाशयस्निग्ध श्रीभगवद्भक्त का सङ्ग (६२)	२२८-२९	८९-९१
नाम-सङ्कीर्तन (६३)	२३०-३४	९१
श्रीमथुरामण्डल में स्थिति (६४)	२३५-३८	९३
साधन-पञ्चक के साथ स्वल्प सम्बन्ध से भी शुभोदय	२३८	९३
श्रीमूर्त्ति	२३९	९३
श्रीमद्भागवत	२४०	९३

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
कृष्णभक्त	२४१	९५
नाम	२४२	९५
श्रीमथुरामण्डल	२४३	९५
भक्ति की अलौकिकता	२४४	९५
भक्ति का मुख्य फल रति	२४५	९५
कर्म के भक्ति का अङ्ग होने की असिद्धि	२४६	९७
कर्म का अधिकार-काल	२४७	९७
भक्ति की ज्ञान-कर्मादि-निरपेक्षता	२४८-५०	९७
ज्ञान-वैराग्य के साध्य की भक्ति से ही सिद्धि	२५१-५३	९७
युक्त वैराग्य से फल्गु वैराग्य का भेद और इनके लक्षण	२५४-५६	९९
फल्गु वैराग्य और भक्ति-शैथिल्य की निषिद्धता	२५७-५९	९९
विवेकादि उत्तम भक्ति के अङ्ग नहीं	२६०	९९
यम, शुचिता आदि गुण श्रीकृष्णभक्ति के आनुषङ्गिक ही	२६१-६३	९९-१०१
एक अङ्गवाली या अनेक अङ्गोंवाली भक्ति की सिद्धिप्रदता निष्ठा से ही	२६४	१०१
एकाङ्गा भक्ति	२६५	१०१
अनेकाङ्गा भक्ति	२६६-६८	१०१-१०३
वैधी भक्ति ही मर्यादामार्ग	२६९	१०३
रागानुगा भक्ति	२७०-७१	१०३
रागात्मिका भक्ति कामरूपा तथा सम्बन्धरूपा	२७२-७५	१०३
अनुकूल-प्रतिकूल अनुशीलनों का प्राप्तिभेद	२७६-८०	१०५
राग-बन्ध से भजन	२८१-८२	१०५
कामरूपा भक्ति	२८३-८६	१०७
कामप्राया रति	२८७	१०७
सम्बन्धरूपा भक्ति	२८८-९०	१०७-१०९

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
इसमें अधिकारी	२९१-९३	१०९
रागानुग-भजनविधि	२९४-९६	१०९
कामानुगा	२९७-३०४	१०९-१११
सम्बन्धानुगा	३०५-३०८	१११-११३
रागानुगा भक्ति, पुष्टिमार्ग	३०९	११३

तृतीय लहरी—भावभक्ति

भाव	१-५	११५
द्विविध भाव	६-८	११५-११७
आद्य	९-१३	११७-११९
द्वितीय	१४	११९
श्रीकृष्ण और उनके भक्तों के प्रसाद से उत्पन्न	१५	११९
श्रीकृष्णप्रसादज	१६	११९
वाचिक-प्रसादज	१७	११९
आलोक-दानज	१८	१२१
हार्द-प्रसादज	१९-२०	१२१
श्रीकृष्णभक्त के प्रसाद से उत्पन्न	२१-२३	१२१
रति की पञ्चविधता	२४	१२१
भाव का अङ्कुर उत्पन्न होने के लक्षण	२५-२६	१२३
क्षान्ति	२७-२८	१२३
अव्यर्थकालता	२९	१२३
विरक्ति	३०-३१	१२३-१२५
मानशून्यता	३२-३३	१२५
आशाबन्ध	३४-३५	१२५
समुत्कण्ठा	३६-३७	१२५-१२७
नाम-गान में सदा रुचि	३८	१२७
उनके गुणगान में आसक्ति	३९	१२७

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
उनके वासस्थल के प्रति प्रीति	४०	१२७
रत्याभास द्विविध	४१-४५	१२९
उनमें से प्रतिबिम्ब	४६-४८	१२९
छाया	४९-५३	१३१
श्रीकृष्णप्रियों के प्रति अपराध से भाव-भावाभास दशाओं से पतन	५४-५७	१३१-१३३
श्रीकृष्ण-प्रसादज भावलक्षण	५८	१३३
भाव उत्पन्न हो चुके हुए व्यक्ति में वैगुण्यलिप्तता का अभाव	५९-६०	१३३
रति का स्वरूप	६१	१३३

चतुर्थ लहरी—प्रेमभक्ति

प्रेम	१-४	१३५
भाव से उदित	५	१३५
वैध भाव से उदित	६	१३५
रागानुगीय भाव से उदित	७-८	१३७
हरि के अति प्रसाद से उदित	९-११	१३७
माहात्म्यज्ञान से युक्त	१२	१३७
केवलप्रेम	१३-१४	१३७
प्रेमोदय-क्रम	१५-१६	१३९
प्रेम की सुदुर्गमता	१७-१८	१३९
स्नेहादिभेद का उल्लेख न होने का कारण	१९-२०	१३९
पूर्वविभाग का उपसंहार	२१	१३९

सामान्य-भगवद्भक्तिरस-निरूपक
दक्षिण-विभाग
प्रथम लहरी—विभावाख्या

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
मङ्गलाचरण	१	१४१
दक्षिण विभाग के विषय	२-४	१४१
भक्तिरसलक्षण	५-६	१४१
भक्तिरस की उत्पति में अधिकारी	७-१०	१४३
प्रेम का वैशिष्ट्य	११	१४३
विभावादि का सामान्य लक्षण	१२-१३	१४३
विभाव	१४-१५	१४३-१४५
आलम्बन	१६	१४५
श्रीकृष्ण	१७	१४५
अन्यरूप से	१८	१४५
स्वरूप	१९	१४५
आवृत	२०-२१	१४७
प्रकट-स्वरूप	२२	१४७
श्रीकृष्ण के गुण (सम्पूर्ण चौंसठ)	२३-४४	१४७-१५१
जीव में बिन्दु रूप से स्थित गुण (पचास)	२३-३६	१४७-१५१
गिरीश आदि में स्थित गुण (पचपन)	३७-३८	१५१
श्रीनारायण में स्थित गुण (साठ)	३९-४०	१५१
श्रीकृष्ण में स्थित गुण (चौंसठ)	४१-४४	१५१
सुरम्याङ्ग (१)	४५-४६	१५३
सर्वसल्लक्षणान्वित (२)	४७	१५३
गुणोत्थ	४८-४९	१५३

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
अङ्कोत्थ	५०-५१	१५३-१५५
रुचिर (३)	५२-५४	१५५
तेज से युक्त (४)	५५	१५५
धाम (ज्योति)	५६-५७	१५७
प्रभाव	५८-५९	१५७
बलीयान् (५)	६०-६२	१५७-१५९
वयसान्वित (६)	६३-६४	१५९
विविध-अद्भुत-भाषाविद् (७)	६५-६६	१५९
सत्यवाक्य (८)	६७-६९	१६१
प्रियंवद (९)	७०-७१	१६१
वावदूक (१०)	७२-७४	१६३
प्रथम	७३	१६३
द्वितीय	७४	१६३
सुपाण्डित्यशाली (११)	७५	१६३
प्रथम	७६-७७	१६३-१६५
द्वितीय	७८	१६५
बुद्धिमान् (१२)	७९	१६७
मेधावी	८०	१६७
सूक्ष्मबुद्धि वाला	८१	१६७
प्रतिभान्वित (१३)	८२-८३	१६७
विदग्ध (१४)	८४-८५	१६९
चतुर (१५)	८६-८७	१६९
दक्ष (१६)	८८-९०	१६९-१७१
कृतज्ञ (१७)	९१-९३	१७१
सुदृढ़व्रत (१८)	९४	१७१
सत्यप्रतिज्ञ	९५-९६	१७१-१७३
सत्यनियम	९७	१७३
देश-काल-सुपात्रज्ञ (१९)	९८-९९	१७३

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
शास्त्रचक्षु (२०)	१००-१	१७३-१७५
शुचि (२१)	१०२	१७५
पावन	१०३	१७५
विशुद्ध	१०४	१७५
वशी (२२)	१०५-६	१७५-१७७
स्थिर (२३)	१०७-८	१७७
दान्त (२४)	१०९-१०	१७७
क्षमाशील (२५)	१११-१३	१७९
गम्भीर् (२६)	११४-१६	१७९-१८१
धृतिमान् (२७)	११७	१८१
प्रथम	११८	१८१
द्वितीय	११९	१८१
सम (२८)	१२०-२२	१८१-१८३
वदान्य (२९)	१२३-२५	१८३-१८५
धार्मिक (३०)	१२६-२८	१८५
शूर (३१)	१२९-३१	१८५-१८७
प्रथम	१३०	१८७
द्वितीय	१३१	१८७
करुण (३२)	१३२-३४	१८७
मान्यमानकृत् (३३)	१३५-३६	१८९
दक्षिण (३४)	१३७-३८	१८९
विनयी (३५)	१३९-४०	१८९
ह्रीमान् (३६)	१४१-४२	१९१
शरणागत-पालक (३७)	१४३-४४	१९१
सुखी (३८)	१४५-४७	१९१-१९३
प्रथम	१४६	१९३
द्वितीय	१४७	१९३
भक्त-सुहृद् (३९)	१४८-५०	१९३

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
प्रथम	१४९	१९३
द्वितीय	१५०	१९३
प्रेमवश्य (४०)	१५१-५३	१९५
सर्वशुभङ्कर (४१)	१५४-५५	१९५
प्रतापी (४२)	१५६-५७	१९५
कीर्त्तिमान् (४३)	१५८-६०	१९७
रक्तलोक (४४)	१६१-६३	१९७-१९९
साधु-समाश्रय (४५)	१६४-६५	१९९
नारीगणमनोहारी (४६)	१६६-६८	१९९-२०१
सर्वाराध्य (४७)	१६९-७०	२०१
समृद्धिमान् (४८)	१७१-७३	२०१-२०३
वरीयान् (४९)	१७४-७५	२०३
ईश्वर (५०)	१७६-७९	२०३-२०५
स्वतन्त्र	१७७	२०३
दुर्लङ्घ्य-आज्ञा वाला	१७८-७९	२०५
सदा स्वरूप को सम्प्राप्त (५१)	१८०-८१	२०५
सर्वज्ञ (५२)	१८२-८३	२०५-२०७
नित्यनूतन (५३)	१८४-८६	२०७
सच्चिदानन्द-सान्द्राङ्ग (५४)	१८७-९१	२०९
सर्वसिद्धि-निषेवित (५५)	१९२-९३	२११
अविचिन्त्य महाशक्ति (५६)	१९४-९८	२११
दिव्यसर्गादिकर्तृत्व	१९५	२११
ब्रह्मा-रुद्र आदि का मोहन	१९६	२११
भक्त के प्रारब्ध का विध्वंस	१९७	२१३
दुर्घट-घटना	१९८	२१३
कोटि-ब्रह्माण्ड-विग्रह (५७)	१९९-२०१	२१३
अवतारावलि-बीज (५८)	२०२-३	२१५
हतारि-गतिदायक (५९)	२०४-६	२१५

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
आत्माराम-गणाकर्षी (६०)	२०७-८	२१७
लीलामाधुर्य (६१)	२०९-१०	२१७
प्रेम के कारण प्रियाधिक्य (६२)	२११-१२	२१७-२१९
वेणुमाधुर्य (६३)	२१३-१४	२१९
रूप-माधुर्य (६४)	२१५-१७	२१९-२२१
श्रीकृष्ण के गुणों की अनन्तता	२१८-२०	२२१
भक्त एवं भक्ति के अनुरूप श्रीकृष्ण के पूर्ण-पूर्णतर-पूर्णतम आदि भेद	२२१-२३	२२३
श्रीकृष्ण के नायकत्व-भेद	२२४-४०	२२३-२२९
धीरोदात्त	२२६-२९	२२३-२२५
धीरललित	२३०-३२	२२५-२७
धीरशान्त	२३३-३५	२२७
धीरोद्धत	२३६-४०	२२७-२२९
श्रीहरि में विरुद्ध गुणों का समावेश	२४१-४३	२२९
श्रीहरि सर्वगुणालय एवं सर्वदोषरहित	२४४-४६	२३१
अठारह महादोष	२४७-४८	२३१
श्रीकृष्ण सर्वेश्वरेश्वर	२४९-५०	२३१
श्रीकृष्ण के आठ सद्गुण	२५१-७१	२३३-२३९
शोभा	२५३-५४	२३३
विलास	२५५-५६	२३३-२३५
माधुर्य	२५७-५८	२३५
माङ्गल्य	२५९-६०	२३५
स्थैर्य	२६१-६२	२३७
तेजस्	२६३-६६	२३७
लालित्य	२६७-६८	२३९
औदार्य	२६९-७१	२३९
श्रीकृष्ण के सहायक	२७२	२३९
श्रीकृष्ण के भक्त	२७३-३००	२४१-२५९

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
साधक	२७६-७९	२४१-२४३
सिद्ध	२८०-८१	२४३
सम्प्राप्त-सिद्धि वाले	२८२	२४३
साधन-सिद्ध	२८३-८५	२४३-२४५
कृपासिद्ध	२८६-८९	२४५
नित्यसिद्ध	२९०-३००	२४५-२४९
उद्दीपन	३०१-२	२४९
गुण	३०३-४२	२४९-२६३
कायिक गुण	३०४-७	२५१
वयस्	३०८-१२	२५१-२५३
प्रथमवयस् (कैशोर)	३१३-१४	२५३
वेशादिशोभा	३१५-१६	२५३
अङ्गशोभा	३१७-१८	२५५
मोहनता	३१९	२५५
मध्यम (कैशोर)	३२०-२५	२५५-२५७
मोहनता	३२६	२५७
अन्तिम (कैशोर)	३२७-२८	२५९
माधुर्य	३२९-३२	२५९
मोहनता	३३३-३५	२६१
सौन्दर्य	३३६-३७	२६१
रूप	३३८-३९	२६३
मृदुता	३४०-४१	२६३
गुण ही उद्दीपन	३४२	२६३
चेष्टायें	३४३	२६३
रास	३४४	२६५
दुष्टों का वध	३४५	२६५
प्रसाधन	३४६	२६५
वसन	३४७	२६५

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
युग्म (वसन)	३४८-४९	२६५-२६७
चतुष्क (वसन)	३५०-५१	२६७
भूयिष्ठ (वसन)	३५२-५३	२६७
आकल्य	३५४-५८	२६९
मण्डन	३५९-६१	२७१
स्मित	३६२	२७१
अङ्गसौरभ	३६३	२७१
वंश	३६४-६५	२७३
वेणु	३६६	२७३
मुरली	३६७	२७३
वंशी	३६८-७२	२७३-२७५
सींगा	३७३-७४	२७५
नूपुर	३७५	२७५
शङ्ख	३७६-७७	२७७
चरण-चिह्न	३७८-७९	२७७
क्षेत्र	३८०	२७९
तुलसी	३८१	२७९
भक्त	३८२-८३	२७९-२८१
हरिवासर (एकादशी आदि)	३८४	२८१

द्वितीय लहरी—अनुभाव

अनुभाव	१-३	२८३
नृत्य	४	२८३
विलुण्ठित	५-६	२८३-२८५
गीत	७	२८५
क्रोशन (चिल्लाना)	८-९	२८५
शरीर मरोड़ना	१०	२८७
हुङ्कार	११	२८७

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
जृम्भण (जमुहाई)	१२	२८७
श्वासाधिक्य (साँस फूलना)	१३	२८७
लोकानपेक्षिता	१४-१५	२८९
लार बहना	१६	२८९
अट्टहास	१७-१८	२८९
घूर्णा (चक्कर)	१९	२९१
हिचकी	२०	२९१
विरल अनुभाव	२१	२९१
तृतीय लहरी—सात्त्विक भाव		
सात्त्विक भाव	१-२	२९३
स्निग्ध	३	२९३
मुख्य	४-६	२९३
गौण	७-८	२९५
दिग्ध	९-११	२९५
रूक्ष	१२-१३	२९७
रूक्ष रोमाञ्च	१४	२९७
अष्ट सात्त्विक	१५-२०	२९७-२९९
स्तम्भ (१)	२१	२९९
हर्ष से	२२	२९९
भय से	२३	३०१
आश्चर्य से	२४-२५	३०१
विषाद से	२६	३०१
अमर्ष से	२७	३०३
स्वेद(२)	२८	३०३
हर्ष से	२९	३०३
भय से	३०	३०३
क्रोध से	३१	३०५
रोमाञ्च (३)	३२	३०५

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
आश्चर्य से	३३	३०५
हर्ष से	३४	३०५
उत्साह से	३५	३०७
भय से	३६	३०७
स्वरभेद (४)	३७	३०७
विषाद से	३८	३०७
विस्मय से	३९	३०९
अमर्ष से	४०	३०९
हर्ष से	४१	३०९
भय से	४२	३०९
कम्प (५)	४३	३११
वित्रास से	४४	३११
अमर्ष से	४५	३११
हर्ष से	४६	३११
वैवर्ण्य (६)	४७	३११
विषाद से	४८	३१३
रोष से	४९	३१३
भीति से	५०	३१३
वैवर्ण्य के भेद	५१-५२	३१३
अश्रु (७)	५३	३१५
हर्ष से	५४	३१५
रोष से	५५-५६	३१५
विषाद से	५७	३१५
प्रलय (मूर्च्छा) (८)	५८	३१७
सुख से	५९	३१७
दुःख से	६०	३१७
सात्त्विक-साधारणतया	६१-६२	३१७
विशिष्ट-सात्त्विक-चतुष्ट्य	६३	३१७

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
इस चतुष्टय में तारतम्य	६४-७०	३१९
धूमायित सात्त्विक भाव	७१-७२	३२१
ज्वलित	७३-७५	३२१
दीप्त	७६-७८	३२३
उद्दीप्त	७९-८१	३२३-३२५
चार सात्त्विकाभास	८२-८३	३२५
रत्याभास से उत्पन्न	८४-८५	३२५
सत्त्वाभास से उत्पन्न	८६-८८	३२५-२७
निःसत्त्व	८९-९१	३२७
प्रतीप	९२	३२७
क्रोधयुक्त	९३	३२९
भय से उत्पन्न	९४-९५	३२९
उपसंहार	९६	३२९

चतुर्थ लहरी—व्यभिचारी भाव

व्यभिचारी भाव	१-६	३३१
निर्वेद (१)	७	३३३
महा-आर्त्ति से	८	३३३
विप्रयोग से	९-१०	३३३
ईर्ष्या से	११	३३५
सद्विवेक से	१२	३३५
शान्तरति के स्थायिभाव होने में मतभेद	१३	३३५
विषाद (२)	१४-१५	३३५
इष्ट की अप्राप्ति से	१६	३३५
प्रारब्ध कार्य सिद्ध न होने से	१७	३३७
विपत्ति से	१८	३३७
अपराध से	१९-२०	३३७
दैन्य (३)	२१	३३९

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
दुःख से	२२	३३९
त्रास से	२३	३३९
अपराध से	२४	३३९
लज्जा से	२५	३३९
ग्लानि (४)	२६	३४१
श्रम से	२७-२८	३४१
आधि से	२९	३४१
रति से	३०	३४३
श्रम (५)	३१	३४३
अध्वा (पथ) से	३२	३४३
नृत्य से	३३	३४३
रति से	३४	३४५
मद (६)	३५	३४५
मधुपान से	३६-३९	३४५-३४७
अनङ्ग विकार से	४०	३४७
गर्व (७)	४१-४२	३४७
सौभाग्य से	४३	३४७
रूप-यौवन से	४४	३४९
गुण से	४५	३४९
सर्वोत्तम आश्रय से	४६	३४९
इष्टलाभ से	४७	३४९
शङ्का (८)	४८	३५१
चौर्य से	४९-५०	३५१
अपराध से	५१	३५१
पर-क्रूरता से	५२-५३	३५३
त्रास (९)	५४	३५३
तड़ित् से	५५	३५३
घोर प्राणी से	५६	३५३

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
उग्र शब्द (नाद) से	५७-५८	३५५
आवेग (१०) अष्टविध	५९-६३	३५५
प्रिय दर्शन से (१)	६४	३५७
प्रिय श्रवण से (१)	६५	३५७
अप्रिय दर्शन से (२)	६६	३५७
अप्रिय श्रवण से (२)	६७	३५७
अग्नि से (३)	६८	३५७
वात से (४)	६९	३५९
वर्षा से (५)	७०-७१	३५९
उत्पात से (६)	७२	३५९
गज से (७)	७३-७५	३६१
अरि से (८)	७६-७७	३६१-३६३
आवेगाभास	७८	३६३
उन्माद (११)	७९-८०	३६३
महान् आनन्द से	८१	३६३
आपत्ति से	८२	३६५
विरह से	८३	३६५
दिव्य उन्माद	८४-८५	३६५
अपस्मार (१२)	८६-८९	३६५-३६७
व्याधि (१३)	९०-९१	३६७-३६९
मोह (१४)	९२	३६९
हर्ष से	९३-९४	३६९
विरह से	९५	३७१
भय से	९६	३७१
विषाद से	९७	३७१
मोह का वैशिष्ट्य	९८	३७१
मृति (मरण) (१५)	९९-१०२	३७१-३७३
आलस्य (१६)	१०३-४	३७३

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
तृप्ति से	१०५	३७५
श्रम से	१०६	३७५
जड़ता (१७)	१०७	३७५
इष्टश्रवण से	१०८	३७५
अनिष्टश्रवण से	१०९	३७७
इष्ट-दर्शन से	११०	३७७
अनिष्ट-दर्शन से	१११	३७७
विरह से	११२	३७७
व्रीड़ा (लज्जा) (१८)	११३	३७७
नवीन सङ्गम से	११४	३७९
अकार्य से	११५	३७९
स्तव और प्रशंसा से	११६	३७९
अवज्ञा से	११७	३७९
अवहित्था (१९)	११८-१२०	३७९-३८१
कुटिलता से	१२१	३८१
दाक्षिण्य से	१२२	३८१
ह्री (लज्जा) से	१२३	३८१
कुटिलता/लज्जा से	१२४	३८३
सौजन्य से	१२५	३८३
गौरव से	१२६	३८३
अवहित्था का वैचित्र्य	१२७-२८	३८३
स्मृति (२०)	१२९	३८३
सदृश-दर्शन से	१३०	३८५
दृढ़ अभ्यास से	१३१	३८५
वितर्क (२१)	१३२	३८५
विमर्श से	१३३	३८५
संशय से	१३४-३५	३८७
चिन्ता (२२)	१३६	३८७

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
इष्ट की अप्राप्ति से	१३७-३८	३८७-३८९
अनिष्ट मिलने से	१३९	३८१
मति (२३)	१४०-४३	३८९-३९१
धृति (२४)	१४४	३९१
ज्ञान से	१४५	३९१
दु:खाभाव से	१४६	३९१
उत्तम प्राप्ति से	१४७	३९१
हर्ष (२५)	१४८	३९३
अभीष्ट दर्शन से	१४९	३९३
अभीष्ट लाभ से	१५०	३९३
औत्सुक्य (२६)	१५१	३९३
इष्ट के दर्शन की स्पृहा से	१५२-५३	३९३-३९५
इष्ट के मिलन की स्पृहा से	१५४	३९५
उग्रता (२७)	१५५	३९५
अपराध से	१५६	३९५
दुर्वचन से	१५७-५८	३९७
अमर्ष (२८)	१५९-६०	३९७
अधिक्षेप से	१६१	३९७
अपमान से	१६२	३९९
वञ्चना से	१६३	३९९
असूया (२९)	१६४	३९९
अन्य के सौभाग्य से	१६५-६६	३९९-४०१
गुण से	१६७	४०१
चपलता (३०)	१६८	४०१
राग से	१६९	४०१
द्वेष से	१७०	४०१
निद्रा (३१)	१७१	४०३
चिन्ता से	१७२	४०३

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
आलस्य से	१७३	४०३
निसर्ग से	१७४	४०३
क्लम (खेद) से	१७५	४०३
निद्रा का विशेष लक्षण	१७६	४०५
सुप्ति (३२)	१७७-७८	४०५
बोध (३३)	१७९	४०५
अविद्या-ध्वंस से	१८०-८१	४०५-४०७
मोहध्वंस से	१८२	४०७
शब्द से	१८३	४०७
गन्ध से	१८४	४०७
स्पर्श से	१८५	४०९
रस से	१८६	४०९
निद्राध्वंस से	१८७	४०९
स्वप्न से	१८८	४०९
निद्रा-पूर्ति से	१८९	४११
स्वन अर्थात् शब्द से	१९०	४११
तैंतीस व्यभिचारी भावों में अन्य भावों का अन्तर्भाव	१९१-२०४	४११-४१३
सञ्चारी भाव के भेद	२०५	४१५
परतन्त्र	२०६	४१५
वर (श्रेष्ठ)	२०७	४१५
साक्षात्	२०८-९	४१५
व्यवहित	२१०-१२	४१५
अवर	२१३-१४	४१७
भीति और भयरति में भेद	२१५	४१७
स्वतन्त्र (सञ्चारी भाव)	२१६-१७	४१७
रतिशून्य	२१८-१९	४१७-४१९
रति का अनुस्पर्शी	२२०-२१	४१९

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
रतिगन्धि	२२२-२३	४१९
द्विविध आभास	२२४	४२१
प्रतिकूलता	२२५-२७	४२१
अनौचित्य	२२८	४२१
अप्राणी के प्रति	२२९-३१	४२३
भावों की चार दशाएँ	२३२	४२३
उत्पत्ति	२३३-३४	४२३-४२५
सन्धि	२३५	४२५
समानरूप-वालों में	२३६-३७	४२५
भिन्न रूप-वालों में	२३८	४२५
एक हेतु से उत्पन्नों में	२३९	४२७
भिन्न हेतु से उत्पन्नों में	२४०	४२७
सन्धि की द्विविधता	२४१	४२७
एक हेतु से उत्पन्नों में	२४२	४२७
अनेक हेतु से उत्पन्नों में	२४३	४२९
शबलता	२४४-४६	४२९-४३१
शान्ति	२४७-४८	४३१
विषय-संकलन	२४९-५५	४३१-४३३
विभावना आदि के वैशिष्ट्य से एवं भक्तों के भेद से भावों का तारतम्य	२५६-७०	४३३-४३७

पञ्चम लहरी—स्थायी भाव

स्थायी भाव	१-२	४३९
मुख्या रति	३	४३९
स्वार्था रति	४	४३९
परार्था रति	५-७	४३९-४४१
शुद्धा रति	८	४४१

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
सामान्या रति	९-११	४४१
स्वच्छा रति	१२-१५	४४१-४४३
शान्ति	१६-२१	४४३-४४५
रति के तीन भेद	२२-२४	४४५
केवला	२५	४४५
सङ्कुला	२६	४४७
प्रीति	२७-२९	४४७
सख्य	३०-३२	४४७-४४९
वात्सल्य	३३-३५	४४९-४५१
प्रियता	३६-३७	४५१
मुख्या (रति)	३८	४५१
गौणी (रति)	३९	४५१
गौण रतियाँ	४०-५१	४५१-४५५
हास रति	५२-५४	४५५
विस्मय रति	५५-५६	४५५-४५७
उत्साह रति	५७-५९	४५७
शोक रति	६०-६२	४५७-४५९
क्रोध रति	६३-६४	४५९
कृष्ण-विभाव-वाली रति	६५	४५९
वैरी विभाव-वाली रति	६६	४६१
भय रति	६७-६८	४६१
कृष्णविभाव रति	६९	४६१
दुष्टविभाव रति	७०	४६१
जुगुप्सा रति	७१-७२	४६३
संकलन	७३-७६	४६३
रति का शीतत्व, उष्णत्व	७७-७८	४६५
रति में विभावत्वादि-प्राप्ति	७९-१११	४६५-४७३
मुख्य-गौण रूप से द्विधा भक्तिरस	११२-१४	४७३

मुख्य भक्तिरस	११५	४७३
गौण भक्तिरस	११६	४७५
द्वादश-भक्तिरस में वर्ण-देवता आदि भेद	११७-२२	४७५
करुण आदि रसों की प्रौढ़ आनन्दमयता	१२३-२७	४७७
उल्लास-नामक भाव	१२८	४७७
भक्ति के आस्वाद से बहिर्मुख	१२९-३१	४७७-४७९
रस-लक्षण	१३२	४७९
भाव-लक्षण	१३३	४७९
विभाग-समापक श्लोक	१३४	४७९
पाठ-विमर्श		४८१-४८८
विमर्श		४८९-५६४